श्री गौतम-सुधर्म गणधर भास

सं. मुनि जिनसेनविजयजी

लींबडी ज्ञानभंडारनी हस्तप्रत नं. ३२३ नी एक पानानी प्रत उपरथी आ बन्ने भास लख्या छे.

रचयितानुं नाम देखातुं नथी पण रचना घणीज भाववाही छे. प्रतनी परिस्थिति मुजब आशरे सत्तरमा सैकानी गणी शकाय. आ पानामां लखनारे पहेलां श्री सुधर्म गणधरनो भास अने पछीथी श्री गौतमगणधरनो भास आ रीते लख्या छे माटे क्रम ते मुजब राख्यो छे.

आ छे लालनी देशी ॥

ज्ञानादिक गुणखाणि राजगृही उद्यान गणधरलाल
सोहमस्वामी समोसर्याजी ॥१॥

कंचन गौर शरीर वाणी गंगानीर ग०
त्रिहुं पंथे पसरै सदाजी ॥२॥

अंग ११ उपांगह १२ बार दसविध रुचिनो धार ग०
दुगविध शिक्षा उपदिशैजी ॥३॥

तेर क्रिया १३ व्रत बार १२ गिहि पडिमा अगियार ११ ग०
श्रावकगुण २१ भेद सिद्धना १५जी ॥४॥

वैयावच १० कल्प १० धरै दसविध १० छ अकल्प ६ ग०
वंदनदोष ३२ विगथा ४ तजै जी ॥५॥

कुंकुम रोल कचोल गुंहली रंगमरोल ग०
अक्षत श्री फल उपरैजी ॥६॥

मगधाधिपनी नारि सोल सजी सिणगार ग०
लळिलळि करती लुंछणाजी ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोती गुरुमुखचंद पामती परमाणंद ग०
चतुर चिकोरी गोरडीजी ॥८॥

सुरवधु नरवधु कोडि मिली मिली सरखी जोडि ग०
गावै जिनशासन धणीजी ॥९॥

इति सुधर्मगणधर भास ॥

—x—

राजगृही रलियामणी जिहां गुणशिलचैत्य सुठाम साजन मोरी हे

आवो सवाई गुरु भेटवा कांई मेटवा कर्म कठोर सा०
मुनिगण तारामां चंदज्युं आव्या गणि गौतमस्वामि सा० ॥१॥

पांचै इंद्रिय वसि करै वलि पालै पंच आचार सा०
सुमति गुपति धोरी परिं वहै पंच महाव्रत भार सा० ॥२॥

नववाडि ब्रह्म धरै सदा वलि परिहरै च्यार कषाय सा०
लबधि अठावीसनो धणि जयो आठ प्रभावकराय सा० ॥३॥

पहिरणि पीत पटोलडी उपरि नवरंगो घाट सा०
कुंकुमघोलसुं साथिओ करि अक्षत पूरि सुघाट सा० ॥४॥

ललिललि कीजै लुंछणा लेई रजत कनकनां फूल सा०
करो जिनसासन परभावना वजडावो मंगलतूर सा० ॥५॥

इति गौतम गणधर भास ॥

संपर्कसूत्र :
c/o. नलिन के. शाह
हेमंत इलेक्ट्रीक्स
गांधी रोड,
अमदावाद-३८०००१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org